Class - Intermediate 12th
Topic - Concept of Demand

S.S.

# माँग की धारणा

सामान्य अर्थ में माँग से अभिप्राय होता है वस्तु की इच्छा, लेकिन अर्थशास्त्र में मात्र वस्तु की इच्छा माँग का रूप नहीं ले सकती। इच्छा वस्तु की मात्र चाह होती है। माँग का अर्थ प्रभावपूर्ण माँग से लिया जाता है, जिसमें वस्तु की इच्छा के साथ वस्तु को खरीदने के लिए क्रयशक्ति भी हो। पेन्सन ने ठीक ही विचार व्यक्त किया है कि प्रभावपूर्ण इच्छा को ही माँग की श्रेणी में रखा जाना चाहिए। इच्छा को प्रभावपूर्ण होने के लिए दो बातें जरूरी हैं— प्रथम, इच्छा की पूर्ति के लिए आवश्यक धन या क्रयशक्ति का होना तथा द्वितीय धन या साधन को व्यय करने की तत्परता का होना। कोई भी इच्छा माँग का रूप तभी धारण कर सकती है जब वस्तु को खरीदने के लिए आवश्यक साधन हो तथा उसे व्यय करने की तत्परता भी हो। उदाहरणस्वरूप यदि किसी के पास साधन नहीं है लेकिन उसे मोटरकार खरीदने की इच्छा है तो वैसी स्थिति में उसकी इच्छा मात्र कोरी कल्पना होगी। दूसरी ओर, यदि किसी कंजूस व्यक्ति के पास साधन है लेकिन वह व्यय करके मोटरकार खरीदना नहीं चाहता तो उसकी इच्छा भी माँग नहीं कही जाएगी। इस तरह, माँग का अर्थ है वस्तु की इच्छा, साधन तथा साधन को व्यय कर वस्तु को प्राप्त करना। स्टोनियर तथा हेग ने भी लिखा है, " Demand in economic means demand backed up by enough money to pay for the good demanded." लेकिन, प्रभावपूर्ण इच्छा भी माँग नहीं कही जाएगी जब तक इच्छा या आवश्यकता मूल्य के साथ संबंध न हो। प्रभावपूर्ण इच्छा को आवश्यकता कहते हैं लेकिन बिना मूल्य के माँग की बात नहीं सोची जा सकती। वस्तु की माँग हमेशा एक निश्चित समय में किसी दिए गए मूल्य पर की जाती है। इस प्रकार, हम माँग एवं आवश्यकता में भी अंतर पाते हैं। प्रभावपूर्ण इच्छा का होना माँग एवं आवश्यकता दोनों के लिए जरूरी है। आवश्यकता का संबंध निश्चित समयावधि या मूल्य से नहीं होता जबकि माँग का संबंध हमेशा एक निश्चित मूल्य एवं समयावधि से होता है। इस तरह, माँग का अर्थ है किसी निश्चित समय एवं मूल्य पर वस्तु की खरीदी जानेवाली निश्चित मात्रा। प्रो० बेन्हम द्वारा दी गई माँग की परिभाषा सटीक है। इनके अनुसार " किसी दिए हुए मूल्य पर किसी वस्तु की माँग वह मात्रा है जो उस मूल्य पर किसी विशेष समय में खरीदी जाएगी।"

इस प्रकार, माँग के लिए निम्नांकित तत्वों का होना जरूरी है।

Ajanta Oxford
Scanned with CamScanner

वस्तु की इच्छा
1. साधन की उपलब्धि
2. साधन को व्यय करने की तत्परता
3. एक निश्चित मूल्य
4. एक निश्चित समय
5.

सामान्यतया, एक उपभोक्ता किसी वस्तु की माँग किसी समय दिए हुए मूल्य पर करता है। उदाहरण के लिए, यदि श्याम 2 रुपये दर्जन के मूल्य पर 2 दर्जन केले एक दिन खरीदने के लिए तैयार है तो 2 रुपये दर्जन के मूल्य पर केले की दैनिक माँग 2 दर्जन होगी। माँग तालिका हमें किसी दिए हुए किसी दिए हुए समय में भिन्न-भिन्न मूल्यों पर किसी वस्तु की माँग की मात्रा को बताती है। माँग तालिका सामान्यतया दो प्रकार की होती है।

1. व्यक्तिगत माँग तालिका
2. बाजार माँग तालिका

व्यक्तिगत माँग तालिका हमें यह बताती है कि कोई व्यक्ति विभिन्न मूल्यों पर किसी वस्तु की कितनी मात्रा की माँग करता है। किसी देश में बहुत-से लोग रहते हैं तथा बाजार में वस्तुओं की खरीद करते हैं। बाजार माँग तालिका सभी व्यक्तियों या उपभोक्ताओं की माँग तालिका का योग होती है। दूसरे शब्दों में, यह बताती है कि भिन्न-भिन्न मूल्यों पर उपभोक्ताओं की कुल माँग कितनी होती है। एक तरह से यह बाजार में सामूहिक माँग को दर्शाती है।

माँग वस्तु की कीमत, आय, संबंधित वस्तुओं की कीमतें, फैशन तथा रुचि इत्यादि पर निर्भर करती है। इसे हम इस प्रकार व्यक्त करते हैं:— $D = f(P_x, y, P_y, t)$, जहाँ D = माँग, $P_x$ = वस्तु की कीमत, y = आय, $P_y$ = संबंधित वस्तुओं की कीमत, तथा t = रुचि। यदि आय, कीमतें, रुचि इत्यादि दी हुई हो तो माँग मूल्य का फलन होती है, $D = f(P)$ यही कारण है कि माँग रेखा ऊपर से नीचे दाहिने ओर झुकी होती है अर्थात कीमत घटने पर माँग बढ़ती है जबकि कीमत बढ़ने पर माँग में कमी आती है।

Scanned with CamScanner